Govt. Digvijay Auto. PG College, Rajnandgaon

Paper - Population and Environment

Topic - पर्यावरण की जीवन शैली मे गिरावट

Class - MSW(1st sem)

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- पर्यावरण का अवधारणा
- पर्यावरण का अर्थ
- पर्यावरण का परिभाषा
- पर्यावरण की विशेषताएं
- पर्यावरण के प्रकार
- पर्यावरण की जीवन शैली
- पर्यावरण की जीवन शैली में गिरावट
- निष्कर्ष
- संदर्भग्रंथ सूची

प्रस्तावना (introduction)

पर्यावरण के अंतर्गत सभी भौतिक तथा जैविक पदार्थों और उनके आपसी संबंधों को सम्मिलित किया जाता है। अतः व्यक्ति को पर्यावरण का अध्ययन करने के लिए इससे संबंधित विभिन्न विषयों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। सामाजिक विज्ञान तथा विज्ञान की जानकारी पर्यावरण के जैविक संघटकों तथा उसके आपसी संबंधों को समझाने में सहायक होती है।पर्यावरण विश्व का समग्र दृष्टिकोण है क्योंकि यहां किसी समय संदर्भ में बहू स्थानिक तत्वीय एवं सामाजिक आर्थिक तंत्रों, जो जैविक एवं अजैविक रूपों के व्यवहार/आचार पद्धति तथा स्थान की गुणवत्ता तथा गुणों के आधार पर एक दूसरे से अलग होते हैं के साथ कार्य करता है। अर्थात पर्यावरण विश्व का समग्र दृष्टिकोण है तथा इसकी रचना स्थानिक तत्वों वाले एवं विभिन्न सामाजिक आर्थिक तंत्रों से होती है। यह विभिन्न तंत्र अलग-अलग विशेषता वाली होते हैं इन विभिन्नता तंत्रों के साथ पर्यावरण कार्यशील रहता है।

पर्यावरण की अवधारणा (Concept of Environment)

पर्यावरण की अवधारणा इतनी व्यापक और जटिल है कि पर्यावरणविद इसकी किसी सर्वमान्य परिभाषा नहीं दे सके। पर्यावरण की अवधारणा के संदर्भ में कैंब्रिज एनसाइक्लोपीडिया (1990) में व्यक्त किया गया है कि "किसी स्थान की वे परिस्थितियां जिसमें एक जीवधारी रहता, पर्यावरण है। बड़ी संख्या में पर्यावरण के विविध प्रकार (जैसी नगरी पर्यावरण, ट्रॉपिकल रेनफॉरेस्ट पर्यावरण) किसी एक परिभाषा का निर्माण असंभव बना देते हैं। सामान्य तौर पर भौतिक पर्यावरण किसी भू-भाग (जलवायु, भूमि) की विशेषताओं का वर्णन करता है जो कि मानव प्रभाव द्वारा उत्पन्न परिवर्तनों से अछूता रहता है जबकि भौगोलिक पर्यावरण में भौतिक पर्यावरण के साथ उसमें किसी भी रूपांतरण (कृषि व्यवस्था, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण) का समावेश है। जीव धारियों और उनके पर्यावरण के मध्य का संबंध परिस्थितिकीय के विषय के भाग का निर्माण करता है।"

पर्यावरण का अर्थ(Meaning of Environment)

पर्यावरण(Environment) शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा के Environnner शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है “घेरना”। अर्थात किसी जीव के चारों ओर उपस्थित समस्त जैविक तथा अजैविक पदार्थों को पर्यावरण के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार जल, वायु, भूमि उनके पारस्परिक संबंध तथा अन्य वस्तुओं जैसे जीवों, तथा मनुष्य के आपसी संबंधों को मिलाकर ही पर्यावरण निर्माण होता है। पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 में पर्यावरण को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि पर्यावरण के अंतर्गत वह सब कुछ समाविष्ट है जो पृथ्वी पर दृश्य एवं अदृश्य रूप से विधमान है।

पर्यावरण की परिभाषा (Definition of Environment)

- **इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज**; 1968 के अनुसार, पर्यावरण को "जीवन और एक जीव के विकास को प्रभावित करने वाली सभी बाह्य दशाओं और प्रभावों की समग्रता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

- **डगलस व हालैंड के अनुसार-** " पर्यावरण शब्द का प्रयोग बाया शक्तियों, प्रभाव तथा दशाओं के सामूहिक रूप से वर्णन करने हेतु किया जाता है जो जीवित प्राणियों के जीवन, स्वभाव, व्यवहार, बुद्धि, विकास और परिपक्वता का प्रभाव डालते हैं।"

- **पार्क के अनुसार-** " पर्यावरण का अर्थ उन दशाओं के योग से होता है जो मनुष्य को निश्चित समय में निश्चित स्थान पर आवृत करती है।"

पर्यावरण की विशेषताएं (Characteristic of Environment)

1. पृथ्वी पर पर्यावरण भौतिक एवं जैविक घटकों की पारस्परिक अंतर क्रिया का परिणाम है।
2. पर्यावरण के अंतर्गत उन सभी बाह्य दशाओं और प्रभावों का समावेश है, जो किसी जीवधारी के जीवन और विकास को प्रभावित करते हैं।
3. पर्यावरण के कुछ घटक दृश्य है तो कुछ अदृश्य और उन्हें इंद्रियों से अनुभूत नहीं किया जा सकता।
4. पर्यावरण के निर्माण एवं विनाश में मनुष्य सहित जैवमंडल की भूमिका सर्वोपरि है।
5. पर्यावरण की विविधता तथा जटिलता में जैविक एवं अजैविक घटकों की अतिरिक्त मानवीय कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।
6. पृथ्वी पर पर्यावरण लाखों वर्षों के प्राकृतिक पर्यावरण का परिणाम है। पृथ्वी केवल मनुष्य के लिए ही नहीं बनी है किंतु मनुष्य ने इसके संसाधनों का दोहन अपने पक्ष में किया है जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक संतुलन बिगड़ा है।
7. जीव धारियों के अनुकूल आवास स्थल पृथ्वी ही हैं जिसमें संसाधन की सीमा है। अतः संसाधनों की निरंतर उपलब्धता बनाए रखने में मानवीय समझ और विवेक की आवश्यकता है जिसे 'पर्यावरण निष्ठा' कह सकते हैं।

पर्यावरण के प्रकार (Type of Environment)

- **अजैविक/ भौतिक पर्यावरण** - भौतिक पर्यावरण के अंतर्गत पृथ्वी पर विद्यमान सभी अजैविक घटक हो या अवयवों का समावेश है।यह घटक निर्जीव होते हुए भी प्राकृतिक संतुलन और जैविक पर्यावरण की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। भौतिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों में भूमि, जल, ताप, प्रकाश, अग्नि एवं अन्य भौतिक तत्वों का समावेश है। और जैविक पर्यावरण को प्रमुख तीन श्रेणियों में विभक्त किया जाता है १. ठोस दशा २. तरल दशा तथा ३. वायु दशा। यह तीनों दशाएं क्रमशः स्थल मंडल, जलमंडल तथा वायुमंडल का प्रतिनिधित्व करती है।
- **जैविक पर्यावरण** - पृथ्वी पर और इसके चारों ओर विभिन्न प्रकार के जीव धारियों का जो संसार है वह जैविक या प्राणीशास्त्रीय पर्यावरण का निर्माण करता है। इसके अंतर्गत सूक्ष्म जीवों से लेकर वनस्पतियों तथा सभी प्रकार के जीवधारियों का समावेश है। जैविक पर्यावरण को दो प्रकार में विभक्त किया जाता है - १. वानस्पतिक पर्यावरण (Floral Environment) तथा २. जंतु पर्यावरण (Faunal Environment)।

सामाजिक पर्यावरण - सामाजिक पर्यावरण के अंतर्गत मनुष्य के सामाजिक जीवन के सभी पक्षों का समावेश है। सामाजिक जीवन में प्रथाएं, परंपराएं, शिक्षा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक तंत्र और समग्र समाज व्यवस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामाजिक जीवन के यह घटक एक ऐसे परिवेश का निर्माण करते हैं जिसका संबंध पर्यावरण के भौतिक और जैविक पक्षों से भी है। सामाजिक पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है -

ग्रामीण सामाजिक पर्यावरण - मनुष्य अपने अस्तित्वकाल से ही प्रकृति के सानिध्य में रहा है। सभ्यता के उदय और विकास के साथ मनुष्य ने आदिम जीवन को छोड़कर ग्रामीण जीवन को अपनाया। लगभग 10-12 हजार वर्ष पूर्व मनुष्य ने जंगलों को काट कर एवं जलाकर जमीन साफ की और ईसा 8000 पूर्व कृषि प्रारंभ की।

नगरीय सामाजिक पर्यावरण - नगरीय एवं ग्रामीण पर्यावरण में भिन्नता का प्रमुख कारण मनुष्य कृत कार्य हैं। नगरीय पर्यावरण मानवीय प्रभुत्व और उधम का प्रतीक है। इसलिए नगरीय सामाजिक पर्यावरण कृत्रिम होता है। नगरीय पर्यावरण में प्रदूषण एवं पर्यावरणीय क्षय अपेक्षाकृत ज्यादा होता है।

पर्यावरण की जीवन शैली

पर्यावरण उन सभी भौतिक रासायनिक एवं जैविक कारकों की कुल इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितांत्रिक आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप जीवन और जीविता को तय करता है। पर्यावरण के जैविक संघटकों को सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े मकोड़े सभी जीव जंतु और पेड़ पौधे के अलावा उनसे जुड़ी सारी जैविक क्रियाएं और प्रक्रियाएं भी शामिल है जबकि पर्यावरण के अजैविक संघटकों में निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रिया आती है जैसे पर्वत चट्टाने नदी हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि।

पर्यावरण की जीवन शैली में गिरावट

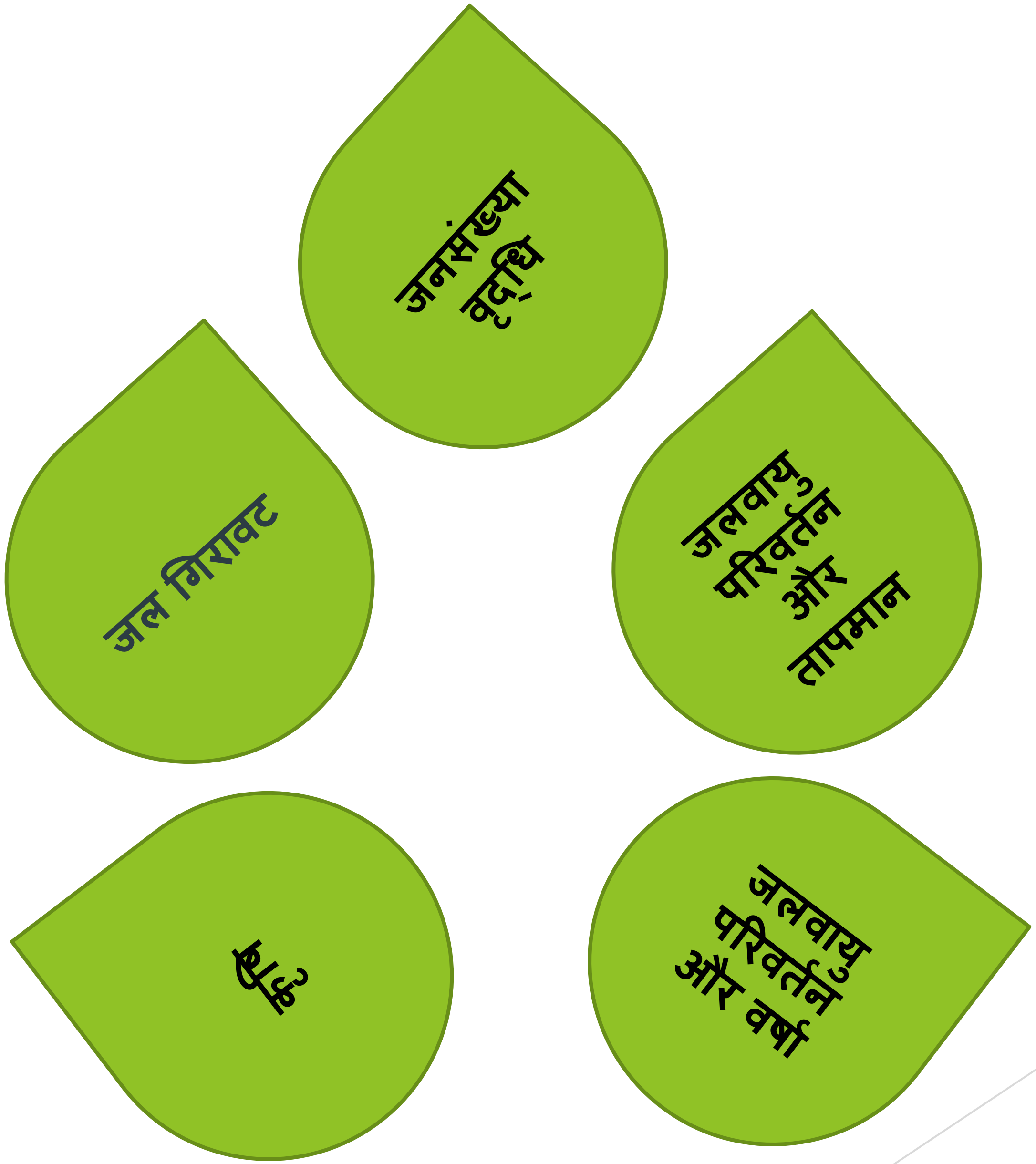

निष्कर्ष

पर्यावरण का अध्ययन एक बहुशिक्षात्मक विषय है जिसके अंतर्गत इसके विभिन्न पहेलुओ का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत पर्यावरण की अवधारणा, अर्थ, परिभाषा एवं पर्यावरण के विभिन्न प्रकार, पर्यावरण की विशेषता का अध्ययन करते हैं। पर्यावरण मानव जीवन में अति आवश्यक भूमिका निभाती है जिसका संरक्षण मानव को अवश्य ही करना चाहिए।

संदर्भग्रंथ सूची

1 आरसी अग्रवाल भारतीय संविधान का विकास तथा राष्ट्रीय आंदोलन

2 एस चंद एंड कंपनी लिमिटेड नई दिल्ली (2000)

Thank You